

युग प्रवर्तक के निर्माण में बाल उपन्यास 'टेढ़ा पुल'

डॉ. एस. रज़िया बेगम

सह प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, फैकल्टी ऑफ़ लिबरल आर्ट्स एंड बिजनेस स्टडीज, एसआरएम
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान - 603 203

भूमिका:

बाल साहित्य का जीवन में कितना महत्व है, इसको यदि हम एक पंक्ति में व्याख्यायित करना चाहें तो कह सकते हैं कि यह मानव जीवन के व्यक्तित्व निर्माण की नींव है। हमारे बचपन का मस्तिष्क अति जिज्ञासु, संवेदनशील और तीव्रग्राही होता है। बचपन वह अवस्था है, जहाँ से हम सीखना शुरू करते हैं और उस समय का हमारा सीखा गया ज्ञान और अनुभव हमारे अवचेतन में संगृहीत होकर पूरी ज़िंदगी हमारा मार्ग प्रशस्त करता है। यही कारण है कि हमारे पुरखों ने बच्चों के शिक्षण का एक अद्भुत और मनोरंजक तरीका खोजा और विकसित किया कहानी कहने-सुनाने की परम्परा का। आज पूरी दुनिया में हो रहे अनुसंधानों से यह बात स्पष्ट होकर आ गई है कि बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा मनोरंजक और मातृभाषा में ही होनी चाहिए। स्पष्ट है कि हमारे पुरखे इस बात को बहुत पहले से ही समझकर बच्चों को सीखने-सिखाने के लिए विभिन्न विषयों से सम्बन्धित लोककथाओं का विपुल मात्रा में सृजन कर चुके थे। लोकभाषाओं में सृजित ये लोककथाएँ हमें अपने लोक और परम्पराओं से तो जोड़कर रखती ही हैं, साथ ही बच्चों को भावी जीवन के लिए सुशिक्षित और प्रशिक्षित भी करती हैं। हमारे यहाँ कथाओं की वाचिक परम्परा रही है और बच्चे उन्हें सुनकर, उनके माध्यम से ही दुनिया और समाज को जानना, उनसे अपना रिश्ता कायम करना और उनके साथ यथोचित व्यवहार करना सीखते हैं। यह अलग बात है कि पाश्चात्य शिक्षा और जीवन-शैली के प्रभाव में यह परम्परा अब जीवित नहीं रही, लेकिन उसकी प्रासंगिकता अभी भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। यह खुशी की बात है कि पिछले कुछ दशकों में हमने बाल साहित्य के महत्व को समझा है और रचनाकारों ने भी अपनी लेखनी से इस क्षेत्र को समृद्ध किया है। वर्तमान समय में हमारे बीच एक ऐसे ही महत्वपूर्ण बाल साहित्यकार डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' जी हैं। नागेश जी के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपनी रचनाओं में सिर्फ मनोरंजन के लिए कोई कल्पित कथा नहीं रचते, बल्कि वर्तमान समय में जीवन, उसकी जटिलताओं और उससे बालमन पर पड़ने वाले प्रभाव का सूक्ष्मता से आकलन और अंकन करते हैं। उनकी एक ऐसी ही कृति है बाल उपन्यास 'टेढ़ा पुल'।

मुख्य बिंदु - बाल उपन्यास, बाल मन, बाल मन की जटिलतायें, बाल मन पर पड़ने वाले प्रभाव, समस्याओं का समाधान।

मूल आलेख

इस उपन्यास का मूल विषय माता-पिता के खराब संबंधों का बच्चों के विकास और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव तथा बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में अच्छे दोस्त और शिक्षकों की भूमिका है। यँ तो माता-पिता के

खराब संबंधों या अलगाव के कारण बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव को लेकर कई कहानियाँ और उपन्यास लिखे गए हैं, जिनमें मन्नू भंडारी की कहानी 'कठपुतली', उनका चर्चित उपन्यास 'आपका बंटी', निर्मल वर्मा की कहानी 'परिदे', शेखर जोशी की 'जिद्दी' और गोविन्द मिश्र की 'शुरुआत' जैसी कहानियाँ प्रमुख हैं, जो माता-पिता के अलगाव या खराब सम्बन्धों के बच्चों पर पड़ने वाले गंभीर मनोवैज्ञानिक प्रभावों को प्रस्तुत करती हैं। निश्चित रूप से ये गंभीर विमर्श और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की कहानियाँ या उपन्यास हैं। किन्तु नागेश पाण्डेय 'संजय' का यह उपन्यास 'टेढ़ा पुल' इन सबसे अलग है। हालाँकि यह एक बाल उपन्यास है, किन्तु इसकी महत्ता किसी भी प्रकार से बाल-विमर्श की कहानियों या उपन्यासों से कम नहीं है। क्योंकि जहाँ उन कहानियों में किसी भी प्रकार की समस्या का निराकरण तभी संभव है, जब स्वयं माता या पिता या दोनों इस समस्या को समझें और पहल करें, वहीं जब खराब होते आपसी संबंधों के कारण पति-पत्नी के बीच कड़वाहट उत्पन्न हो जाती है, तो वहाँ बच्चों के भविष्य से ज्यादा उनका अपना अहम् महत्वपूर्ण हो जाता है और उसका सबसे अधिक प्रभाव बच्चों पर ही पड़ता है।

इस अर्थ में देखा जाए तो नागेश पाण्डेय का यह उपन्यास 'टेढ़ा पुल' उन उपन्यासों या कथाओं से आगे का विमर्श लेकर सामने आता है। यह बाल उपन्यास माता-पिता के खराब संबंधों या अलगाव के कारण बच्चों की मानसिकता पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव से अलग रहकर, सही सोच के साथ सही दिशा में आगे बढ़ने की बच्चों के अन्दर की सकारात्मक सोच को विकसित करने का काम करता है। जहाँ बाल-विमर्श की हिंदी कहानियाँ मुख्यतः माता-पिता के रिश्तों की जटिलता और बच्चों पर उसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव को सामने लाने की कोशिश करती हैं, वहीं बाल साहित्य बच्चों को इन समस्याओं को सकारात्मक तरीके से सुलझाने के लिए शिक्षित करता है। आज जबकि बाल साहित्य लेखन को हिंदी जगत में बहुत महत्व नहीं दिया जा रहा है, उसे अप्रासंगिक और गैर-ज़रूरी समझकर उपेक्षित कर दिया गया है। इस अर्थ में देखा जाए तो 'टेढ़ा पुल' एक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक पहल है।

इस उपन्यास का कथानक गिजू नामक बच्चे को केंद्र में रखकर बुना गया है, जो माता-पिता के अलग होने के कारण माँ के साथ अपने नाना के घर रहकर अपनी आगे की पढ़ाई कर रहा है। माता-पिता के विलग होने के कारण बच्चों को जिस सामाजिक उपेक्षा के दंश को झेलना पड़ता है तथा बचपन से ही जिस प्रकार के समझौते करने पड़ते हैं, साथ ही बच्चों के अंदर जिस प्रकार की चिंताएँ और प्रश्न उपजने लगते हैं, यह उपन्यास उन्हीं सवालों को कथा के केंद्र में रखता है। जाहिर-सी बात है, बालमन इतना परिपक्व नहीं होता कि वह इन परिस्थितियों को समझ सके और उनसे निपट सके। अतः इन परिस्थितियों में उनका बचपन खोने लगता है। कथाकार गिजू के माध्यम से इन सारी परिस्थितियों को सामने लाता है।

नाना के घर रहकर अपनी आगे की पढ़ाई कर रहे गिजू के मन में घर कर चुकी घटनाएँ किसी प्रेत की तरह उसका पीछा नहीं छोड़तीं। जैसे मन्नू भंडारी द्वारा रचित उपन्यास 'आपका बंटी' के पात्र बंटी को माता-पिता का मोह कभी चैन से नहीं रहने देता और वह भागता ही रहता है, कभी माँ के पास तो कभी पिता के पास। ठीक वैसे ही गिजू का मन भी उद्वेलित हो जाता है, जब बच्चे उसे चिढ़ाते हैं। जब बच्चे कभी उससे उसके पापा का नाम पूछते हैं तो वह शर्म से गड़ जाता है। गिजू आज भी उस पल को याद करता है तो आँखें नम हो जाती हैं, जब वह अपना रिजल्ट लेकर स्कूल से मन-ही-मन साइकिल लेने के लिए पिता को मनाने की तरकीब सोचता हुआ घर पहुँचता है, तो घर पर पूरी महाभारत छिड़ी थी। पापा के पूछे सवाल—“तू बता, तू किसके साथ रहेगा? मेरे साथ या अपनी माँ के साथ?” उसे इन दोनों में से एक को चुनने का अर्थ और भावी जीवन पर उसके प्रभाव की भला क्या समझ? एक अबोध

बच्चे के लिए माँ-पापा के बीच किसी एक का चयन करना क्या सहज होता है? गिजू बस इतना ही कह पाया - “दोनों के साथ।”² भले ही गिजू का निर्णय दोनों के साथ रहने के पक्ष में था, किन्तु इस महाभारत का निर्णय न गिजू की इच्छा से होना था, न उसके निर्णय का कोई मतलब ही था। गिजू को माँ के साथ अपने नाना के घर जाना पड़ा। किन्तु उनके इस निर्णय का असर गिजू पर बहुत गहरा हुआ, जिसे इस उपन्यास में कई घटनाक्रमों और संवादों के जरिए समझा जा सकता है।

ऐसा ही एक वाक्या स्कूल में पिकनिक के प्रोग्राम का है। एक दिन गिजू के स्कूल में पिकनिक जाने का प्लान बनता है, किन्तु हांडा सर ने जब कहा कि सभी बच्चों को इसके लिए पिता से पत्र लिखवाकर लाना होगा, तभी गिजू का बालमन सर से सवाल कर बैठता है, क्या माँ से लिखाया पत्र नहीं चलेगा? पर जाने के लिए माँ मानेगी या नहीं, इस बात से गिजू थोड़ा दुखी हो उठता है और वह बोल उठता है, ‘निर्दयी हैं पापा।’ पर रोहित उसे रोक देता है- ऐसी बातें अपने पापा के बारे में नहीं करो। पर गिजू का मन भरा होता है, तो वह रोहित से कह देता है, ‘तुम्हें क्या, तुम्हारे पापा तो अच्छे हैं।’³

इस क्रम में मित्र रोहित से कहे गए गिजू के वक्तव्य- “इन बड़ों को समझ क्यों नहीं आता कि बच्चों को माँ और पिता दोनों चाहिए। आपस के झगड़े की सज़ा भला ये लोग बच्चे को क्यों देते हैं?”⁴ से गिजू के मन की स्थिति समझी जा सकती है। जैसे की हम सभी अक्सर कहते रहते हैं - जैसे हम लोगों ने अपने बुजुर्गों से सुनी है - विपत्ति के समय ही लोगों की असली पहचान पता चलता है। गिजू का दोस्त रोहित भी इसी को चरितार्थ करता दिखाई देता है। रोहित उसका पक्का दोस्त है। वह उसे हर हाल में खुश रखना चाहता है। दोनों के संवाद इस बात की तरफ ध्यान आकृष्ट करते हैं कि बच्चे अगर सही संगत में हों, तब उनकी बातें भी किसी ज्ञानी से कम नहीं होती हैं। डॉ. रामचंद्र शुक्ल का एक निबंध है- ‘मित्रता’। उस निबंध में लेखक लिखते हैं कि मित्र केवल स्वार्थपूर्ति के लिए नहीं होते, सच्चे मित्र तो ‘पथ-प्रदर्शक के समान होते हैं, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकते हैं।’⁵ गिजू और रोहित ऐसे ही दोस्त हैं। रोहित गिजू के दर्द को अपना दर्द समझकर उसे बताता है कि जो जीवन में खुशियाँ हैं, उन्हें महसूस करो; पिछली बातों की कड़वाहट में वर्तमान की खुशियों का गला मत घोंटो।

किसी भी बाल साहित्य की यही खासियत होती है कि वह बच्चों के अन्दर सद्गुणों को भरने की कोशिश करे, जिसे उपन्यास में शिक्षक तिवारी सर के जरिए पूरा होते हुए देखा जा सकता है, क्योंकि वह बच्चों को अपनी बात रखने और उनसे सवाल करने की पूरी छूट देते हैं। इस तरह बच्चे भी उनसे बेखौफ होकर अपनी बात रखते हैं। दूसरी कक्षा में कितनी भी बदमाशियाँ कर लें, पर तिवारी सर की कक्षा में बच्चे उनसे सब कुछ सीख लेने के लिए आतुर रहते हैं। तिवारी सर बच्चों से कहते हैं- जानते हो, जीवन एक ऊँचे पुल की तरह है। एक ओर चढ़ाई है और एक ओर उतार। चढ़ाई में मेहनत कर ली तो बस जिंदगी की नाव पार हो जाएगी। अब उनकी कक्षा में हर बच्चा बोलने लगा था। तुरंत अंकुर, शैतानियों का बेताज बादशाह, भी बोलने के लिए हाथ खड़ा करने लगा। आज उसने बताया- “साइकल से आता हूँ सर। रास्ते में पुल पड़ता है। मैं साइकिल चढ़ाते हुए थक जाता हूँ। पसीने छूटते हैं सर। पर जब बीच में पहुँचता हूँ तो लगता है कि जैसे कोई किला फतह कर लिया हो। फिर ढलान आ जाता है। साइकल खुद-ब-खुद दौड़ती है।”⁶

तिवारी सर को समझ आ जाता है कि बच्चों ने जीवन के पाठ को बेहतर ढंग से समझा है और उनके चेहरे पर मुस्कराहट तैरने लगती है। जीवन को आसान बनाना हो तो तिवारी सर जैसे शिक्षक का होना बहुत ज़रूरी है। पर गिजू कह नहीं पाता कि उसकी रूह अभी तक ‘टेढ़ा पुल’ में अटकी हुई है, जहाँ उसके पापा, बाबा और दादी रहते हैं, जहाँ से वह इसलिए आ गया कि पापा को माँ के साथ नहीं रहना

और माँ करती भी क्या, उसे नाना के साथ लौट जाना पड़ा। अब गिजू यह सब सोच ही रहा था कि इतने में तिवारी सर उसके बिल्कुल पास आकर पूछ लेते हैं- क्या बात है, गिजू? पर गिजू कुछ नहीं बता पाता। बस इतना सोचकर संतोष पा लेता है कि आखिर मेरी दर्द भरी कहानी रोहित तो जानता ही है। आज बच्चों पर तिवारी सर का इतना असर हुआ कि अगली क्लास में जब क्षमा मैडम को थोड़ी देर हुई, तभी बच्चे जाकर उन्हें बुला लाए। साथ ही अंकुर ने भी दोस्ती का हाथ बढ़ाया और सब आज इतने खुश थे कि पहली बार रोहित ने भी अपनी बुआ के लिए नमकीन पूरी कक्षा में बाँटे और क्लास का माहौल किसी पिकनिक से कम नहीं था। जो बच्चे बड़ी उत्सुकता से पिकनिक में जाने की तैयारी कर रहे थे, अचानक उन्हें खबर मिलती है कि पिकनिक पोस्टपोन हो गई है, जिससे बच्चों के अंदर निराशा की लहर दौड़ पड़ी। पर बच्चों को बताया जाता है कि उन्हें यहाँ अभी किसी के स्वागत के लिए कार्यक्रम तैयार करना है, इसलिए इच्छुक विद्यार्थी अपना नाम दे सकते हैं। लेकिन बच्चों को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। पर तिवारी सर की 'अतिथि देवो भवः' वाली चिड़ा-चिड़ी की कहानी सुन बच्चे मान जाते हैं और कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अपना नाम लिखवा देते हैं। तिवारी सर बच्चों के हठ को बड़े ही सुंदर ढंग से मोड़ देते हैं। वे कहते हैं कि तुम सबको मैं सैर करवा देता हूँ। देखो, लाइब्रेरी में एक नई पुस्तक आई है "घुमक्कड़ पांडे और पुल्लू। तुम चाहो तो खाली पीरियड में उसे पढ़कर यहीं बैठे-बैठे कई जगह की घुमक्कड़ी कर सकते हो। उस किताब में कई स्थानों के रोचक यात्रा-वृत्तांत हैं।"⁷

इस उपन्यास में कई ऐसे प्रसंग सामने आते हैं, जो गिजू के अंतःकरण को झकझोरकर सकारात्मक दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसा ही एक प्रसंग स्कूल में आयोजित होने वाले एक कार्यक्रम का है, जिसके लिए पूरा स्कूल किसी दुल्हन की तरह सजाया गया था। हर बच्चा तिवारी सर और अपने स्कूल की गरिमा को ध्यान में रखकर अपनी पूरी तैयारी में लगा था। सभी बच्चे और शिक्षक अतिथि के इंतज़ार में थे। अतिथि के आने में देरी हो रही थी, जिससे बच्चे परेशान हो रहे थे और अपनी-अपनी बाल-सुलभ प्रतिक्रिया दे रहे थे। ऐसे ही एक छात्र माजिद ने उनके आने में देरी की वजह से कहा- हाँ, उनके लिए 'फूलों नहीं—शूलों का हार लेकर आए हैं स्वागत के लिए।' गिजू को यह बात अच्छी नहीं लगी और उसने कहा—'अरे यार, शूलों नहीं, फूलों बोलना है।' यह सुनकर माजिद वहाँ से चला जाता है।

सभी बच्चे अपनी-अपनी तैयारी में लगे होते हैं। आयोजन बहुत ही सुचारु ढंग से चल रहा था। उपस्थित सभी लोगों ने बच्चों की खूब तारीफ की। पर माजिद थोड़ा उदास-सा था। जब उससे गिजू ने कहा—कहाँ चले गए थे तुम? माजिद का हृदय किसी ज्वालामुखी की तरह फूट पड़ा और वह बताने लगा—“पता है तुम्हें, ये कौन थे? ये मेरे अब्बू थे। खुद तो आलीशान कोठी में रहते हैं और मैं और मेरी अम्मी किराये पर।”⁸ माजिद ने आगे कहा—तुम देखना, एक दिन मैं इनसे भी बड़ा डॉक्टर बनकर दिखाऊँगा। उस दिन गिजू को अहसास हुआ कि पहाड़-सा दुःख माजिद अपने भीतर दबाए हुए था और हिम्मत से काम ले रहा था।

इस घटना ने गिजू को एक नए आत्मबल से भर दिया। जैसे माजिद इस दुःख के बाद भी अपने अन्दर कुछ कर दिखाने का हौसला रखता है, वैसे ही आज से, अभी से मुझे भी हमेशा हिम्मत से काम लेना है और किसी भी परिस्थिति में घबराकर मुश्किलों से हारना तो बिल्कुल नहीं है। ऐसे में हम पाते हैं कि लेखक नागेश जी ने बच्चों की बाल-सुलभ चिंताओं और एक-दूसरे के प्रति संवेदना को जीवित रखते हुए उन्हें कुछ कर दिखाने की प्रेरणा में बदल दिया है।

अब गिजू का मन दूर-दूर नहीं कर रहा था, बल्कि उसका विकास कैसे हो, इस पर अधिक ध्यान था। वह सारी निराशा पीछे छोड़ खूब मेहनत कर रहा था, ट्रॉफी जीत रहा था और उसे तब समझ आया कि

जीवन कैसे जीना चाहिए। एक दिन तिवारी जी रोहित के साथ नवोदय विद्यालय के फॉर्म लेकर घर पर आए और कहा कि मेहनत करोगे तो ज़रूर मिल जाएगी। रोहित को आखिर बताना था कि बैग पैक कर लेना, इस बार हम दूर पर ज़रूर जा रहे हैं। तिवारी सर ने भी हामी भर ली। फिर वह दिन आ ही गया, जब सभी बच्चे बस में बैठकर पिकनिक पर निकल गए। उन्होंने वहाँ विभिन्न प्रजातियों के पक्षी, हिरन, शेर आदि देखे और बड़े खुश हुए। वापसी में बस दूसरी जगह से आ गई, इसलिए 'टेढ़ा पुल' देख नहीं पाए और वह इच्छा अधूरी ही रह गई।

परीक्षा करीब आ चुकी थी, पर बच्चे पिकनिक के रोमांच से बाहर ही नहीं आ रहे थे। पर गिजू सारी यादों से बाहर आ चुका था, क्योंकि उसे समझ आ चुका था कि हर काम समय पर करने से उसका फल प्राप्त होता है। इसलिए अब वह सारी पुरानी बातें भुलाकर अपनी जिंदगी को नए सिरे से शुरू कर लेता है, यह समझकर कि जो चीज़ उसके बस की नहीं है, अब उसमें वह अपना दिमाग नहीं लगाएगा।

आज नाना पता नहीं क्यों परेशान हाल में पहुँचे और साथ में एक बुरी खबर भी थी कि राजेन्द्र यानी गिजू के पिताजी अस्पताल में भर्ती हैं। उन्हें डेंगू हुआ है। नाना की बात सुनकर गिजू का बालमन परेशान हो जाता है। नानी इस बात पर ध्यान नहीं देती, पर मामी नाना का साथ देते हुए कहती हैं- 'कोई अपना स्वभाव क्यों न बदले, पर हमें अपना स्वभाव कभी नहीं बदलना चाहिए।' तब तक माँ भी छत से लौट आती है और पुरानी सारी बातें भूलकर पिताजी की तीमारदारी में लग जाती है। धीरे-धीरे पिताजी के स्वास्थ्य में सुधार आने लगता है और उन्हें अस्पताल से छुट्टी भी मिल जाती है। गिजू सोचने लगता है- सचमुच मेरी माँ किसी ईश्वर से कम नहीं। गिजू का मन फिर बेचैन रहने लगा, पर ज्यादा दिन नहीं, क्योंकि आज पहली बार गिजू अपने पूरे परिवार को एक साथ देख रहा था। गिजू को अहसास होने लगता है कि सब्र का फल मीठा होता है।

इस उपन्यास में एक छोटे से बच्चे के जीवन में कई सारे उतार-चढ़ाव आते हैं, पर लेखक ने कहीं अतिशयोक्ति पैदा नहीं की, न ही पूरी कथा को केवल गिजू के इर्द-गिर्द रखा, बल्कि एक बच्चे के सर्वांगीण विकास में कौन-कौन सी बातों का होना ज़रूरी है, उन सबको उसके साथ जोड़ दिया। घर में एक अच्छा माहौल, स्कूल में एक अच्छा दोस्त, तिवारी सर जैसे शिक्षक और उसके ही जैसे अन्य बच्चे- यह सब बताता है कि यह कहानी केवल समस्याओं को दिखाती ही नहीं, बल्कि उन समस्याओं का निदान भी देती है और बच्चों को अपनी हताशा से लड़ने की काबिलियत और हिम्मत स्वयं में पैदा करना सिखाती है।

इस बाल उपन्यास में हम देख सकते हैं कि उपन्यास का मुख्य पात्र गिजू अपने अन्दर उत्पन्न हो रही नकारात्मक भावनाओं से उबरने में मित्र रोहित और तिवारी जी जैसे शिक्षकों से प्रभावित होता है तथा उनकी अच्छी और प्रेरणादायक बातों को आत्मसात कर लेता है। यह बदलाव केवल उपन्यास के नायक गिजू पटेल के अंदर ही नहीं, बल्कि सहपाठी माजिद और अन्य विद्यार्थियों के अन्दर भी धीरे-धीरे सकारात्मक भाव भरने लगता है। इस उपन्यास में शिक्षकों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि एक अच्छे बाल साहित्यकार का काम बच्चों के अन्दर उत्पन्न हो रही नकारात्मक भावना को सकारात्मक सोच में परिवर्तित करना होता है।

संदर्भ

1. नागेश पाण्डेय 'संजय', टेढ़ा पुल, पृ. 8
2. नागेश पाण्डेय 'संजय', टेढ़ा पुल, पृ. 8
3. नागेश पाण्डेय 'संजय', टेढ़ा पुल, पृ. 13

4. नागेश पाण्डेय 'संजय', टेढ़ा पुल, पृ. 13
5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, निबंध - मित्रता
6. नागेश पाण्डेय 'संजय', टेढ़ा पुल, पृ. 30
7. नागेश पाण्डेय 'संजय', टेढ़ा पुल, पृ. 35
8. नागेश पाण्डेय 'संजय', टेढ़ा पुल, पृ. 46